Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों की आत्म–विश्वास का अध्ययन

शिवाश्रेय यादव
शोध छात्र–एम0ए0, एम0एड्0, नेट,
वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय,
जौनपुर (उ0प्र0

डॉ0 प्रेम चन्द यादव
शोध निर्देशक–एसोसिएट प्रोफेसर, बी0एड्0 विभाग
श्री गाँधी पी0जी0 कालेज,
मालटारी, आजमगढ़

Article Info
Volume 4 Issue 6
Page Number: 102-106

Publication Issue :
November-December-2021

Article History
Accepted : 01 Dec 2021
Published : 25 Dec 2021

सारांश– अध्ययन में परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों की आत्म–विश्वास का अध्ययन करना है। उद्देश्य के रूप में छात्र–छात्राओं एवं ग्रामीण एवं नगरीय विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।ध्ययन वर्तमान में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में अन्तर जानने का प्रयास किया गया है अतः शोध विधि के लिए वर्णनात्मक नुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में कुल 600 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में दैव–निदर्शन विधि से चयनित किया गया, जिसमें से ग्रामीण महाविद्यालयों के 300 विद्यार्थियों तथा नगरीय महाविद्यालयों के 300 विद्यार्थियों को चुना गया है। विद्यार्थियों के **आत्मविश्वास चर** के मापन के लिए डॉ0 रेखा गुप्ता तथा शैक्षिक निष्पत्ति को मापने के लिए परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों (स्नातक के वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांकों को समग्र के रूप में प्रयुक्त किया गया।) आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषणोपरान्त उनका व्याख्या करने पर पाया गया कि– छात्र–छात्राओं की आत्मविश्वास में अन्तर नहीं है जबकि ग्रामीण विद्यार्थियों की आत्मविश्वास नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की अपेक्षा कम पाया गया।

की–वर्ड– परास्नातक, छात्र, छात्राएँ, ग्रामीण, नगरीय, आत्मविश्वास, अन्तर, टी–अनुपात।

प्रस्तावना–आत्मविश्वास वस्तुतः एक मानसिक एवं अध्यात्मिक शक्ति है। आत्मविश्वास से ही विचारों की स्वाधीनता प्राप्त होती है और इसके कारण ही महान कार्यों के संपादन में सरलता और सफलता मिलती है। इसी के द्वारा आत्मरक्षा होती है, जो बालक को आत्मविश्वास से ओत–प्रोत करता है, आत्मविश्वास से युक्त बालक को उसे अपने भविष्य के प्रति किसी भी प्रकार की चिंता नहीं रहती, उसे कोई चिंता नहीं सताती, तथा दूसरे बालक जिन संदेहों और आशंकाओं से दबे रहते है, वह उनसे सदैव मुक्त रहता है। यह प्राणी की आतंरिक भावना है, इसके बिना जीवन में सफलता प्राप्त करना अनिश्चित होता है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is a
distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial Li
unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, p

एक माता–पिता के रूप में, आप अपने बच्चें को एक सुरक्षित वातावरण में सफल और विफल होने के अवसर दे सकते हैं जिससे कि विद्यार्थियों में आत्मविश्वास विपरीत परिस्थितियों में भी कमजोर न होने पाये और यह समझने में भी कि इससे कैसे उबरना है। ऐसा करने से बालक के जीवन में यदि कभी कोई बड़ी समस्या आती है तो बालक उससे आसानी से उसका समाधान कर सकता है। अतएव बालक को समय–समय पर छोटी–छोटी समस्याओं को देते रहना चाहिए जिससे कि आने वाले समय में बड़ी से बड़ी समस्या को आसानी से समाधान कर सकने में सफल हो सके।

महाविद्यालयों में प्रवेश लेने वाले छात्रों को अपने शुरूआती दिनों में महाविद्यालय कैम्पस का वातावरण स्कूल कैम्पस से बिलकुल अलग होने के कारण कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। महाविद्यालयों की पढ़ाई स्कूल से बिलकुल अलग होने के कारण बालक को पढ़ाई को लेकर बहुत सजग रहने की जरुरत पड़ती है। परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों को महाविद्यालय के नए वातावरण से सामंजस्य बैठाने तथा पढाई के मार्ग में आ रही चुनौतियों से निपटने के लिए हमेशा अपने आत्म विश्वास को बनाये रखना चुनौतीपूर्ण कार्य होता है।

उच्च प्रतिस्पर्धी माहौल के कारण महाविद्यालयों में विद्यार्थियों को अपने आप को एक परिपक्व एवं उच्च श्रेणी का विद्यार्थी साबित करने के लिए उनके पास आत्मविश्वास का होना बहुत जरुरी है और यही उनकी सफलता की कुंजी भी है। महाविद्यालय जीवन का तो मतलब ही होता है विभिन्न प्रकार के नए–नए लोगों से मिलना और अलग–अलग मित्रों से रिश्ते बनाना। अब इन सभी रिश्तों को सही तरीके से निभाने के लिए भी आत्म विश्वास का होना बहुत जरुरी है। लेकिन अहम् सवाल यह है कि अपने अन्दर आत्मविश्वास को किस तरह विपरीत परिस्थितियों में भी समान रूप से बनाये रखा जा सके ।

परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों का आत्मविश्वास उनके आत्मसम्मान से जुड़ा होता है तथा अपने बारे में अच्छा महसूस करते हैं। इस स्तर के विद्यार्थियों में उच्च आत्मसम्मान के साथ–साथ उच्च आत्मविश्वास भी पाया जाता है। आत्मविश्वास जीवन भर भिन्न–भिन्न हो सकता है, एक अनुमान के अनुसार महाविद्यालयी विद्यार्थियों में आत्मविश्वास के स्तर के साथ संघर्ष का सामना करना पड़ता है। आत्मविश्वास सुरक्षित, सूचित निर्णय लेने में मदद करता है। सकारात्मक आत्मविश्वास कैसा दिखता है, परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों में आत्मविश्वास किस स्तर पर है, यह देखने के लिए अध्ययन करने पर देखने को मिलता है कि विद्यार्थिओं को समय–समय पर उनके आत्मविश्वास को जाँचने एवं परखने की आवश्यकता होती है तथा अनुसंधान के द्वारा विद्यार्थिओं की आत्मविश्वास की शक्ति को देखा जा सकता है कि वह किस स्तर पर कार्य कर सकता है और किस स्तर पर उसमें सुधार एवं परिमार्जन की आवश्यकता पड़ सकती है ताकि विद्यार्थी को आने वाले समय में उसके आत्मविश्वास में पुनर्बलन के साथ–साथ परिपक्वता आ सके।

समस्या कथन– परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों की आत्म–विश्वास का अध्ययन करना।

अध्ययन का उद्देश्य–अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. परास्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की आत्म–विश्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. परास्नातक स्तर के ग्रामीण एवं नगरीय विद्यार्थियों की आत्म–विश्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

H_{01} परास्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की आत्म–विश्वास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{02} परास्नातक स्तर के ग्रामीण एवं नगरीय विद्यार्थियों की आत्म–विश्वास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध–प्रविधि–अध्ययन वर्तमान में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में अन्तर जानने का प्रयास किया गया है अतः शोध विधि के लिए वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में कुल 600 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में दैव–निदर्शन विधि से चयनित किया गया, जिसमें से ग्रामीण महाविद्यालयों के 300 विद्यार्थियों तथा नगरीय महाविद्यालयों के 300 विद्यार्थियों को चुना गया है। विद्यार्थियों के **आत्मविश्वास चर** के मापन के लिए **डॉ0 रेखा गुप्ता** तथा **शैक्षिक निष्पत्ति को मापने के लिए** परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों (स्नातक के वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांकों को समग्र के रूप में प्रयुक्त किया गया।) आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

1.परास्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की आत्म–विश्वास का तुलनात्मक अध्ययन–

H_{01} परास्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की आत्म–विश्वास में कोई सार्थक अन्तर अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 1

परास्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की आत्म–विश्वास का मध्यमान, मानक विचलन

एवं टी–अनुपात की तालिका

क्र0सं0	लिंग	न्यादर्श की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमानों का अन्तर	मानक त्रुटि	टी–मान
1.	छात्र	300	26.12	7.02	0.25	0.57	0.43
2.	छात्राएँ	300	26.37	6.87			

*0.05 पर असार्थक

परास्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की आत्म–विश्वास का मध्यमान क्रमशः 26.12 एवं 26.37 तथा मानक विचलन 7.02 एवं 6.87 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 0.43 है। मुक्तांश 398 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.96 है अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणीमान से कम है, अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक। परिणामतः कहा जा सकता है कि परास्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के आत्म–विश्वास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

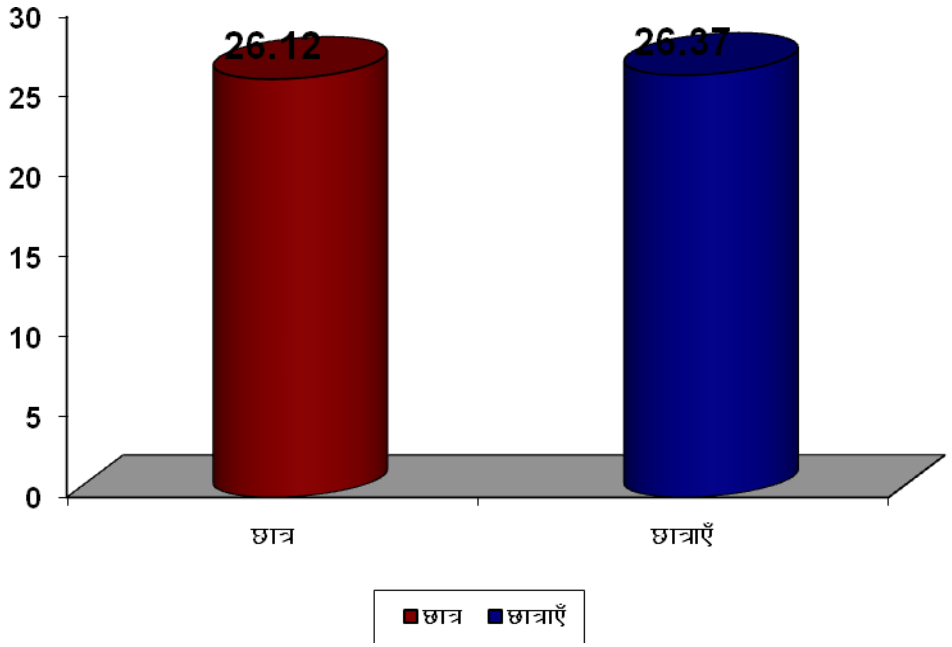

2. परास्नातक स्तर के ग्रामीण एवं नगरीय विद्यार्थियों की आत्म–विश्वास का तुलनात्मक अध्ययन–

H_{02} परास्नातक स्तर के ग्रामीण एवं नगरीय विद्यार्थियों की आत्म–विश्वास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 2

परास्नातक स्तर के ग्रामीण एवं नगरीय विद्यार्थियों की आत्म–विश्वास का मध्यमान,

मानक विचलन एवं टी–अनुपात की तालिका

क्र0सं0	क्षेत्र	न्यादर्श की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमानों का अन्तर	मानक त्रुटि	टी–मान
1.	ग्रामीण	300	24.75	6.54	3.00	0.55	5.45*
2.	नगरीय	300	27.75	7.02			

*0.05 पर सार्थक

परास्नातक स्तर के ग्रामीण एवं नगरीय विद्यार्थियों के आत्म–विश्वास का मध्यमान क्रमशः 24.75 एवं 27.75 तथा मानक विचलन 6.54 एवं 7.02 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 5.45 है। मुक्तांश 398 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.96 है अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणीमान से अधिक है, अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक। परिणामतः कहा जा सकता है कि परास्नातक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में नगरीय विद्यार्थियों का आत्म–विश्वास अधिक है।

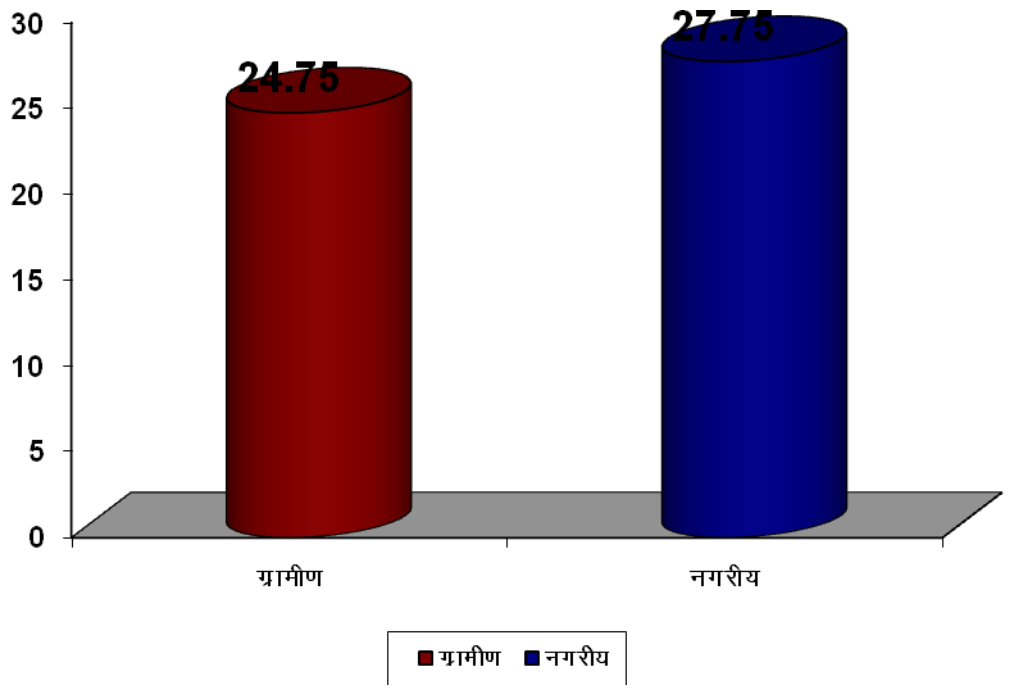

निष्कर्ष– अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- परास्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के आत्म–विश्वास एक–दूसरे के समान है।
- परास्नातक स्तर के ग्रामीण एवं नगरीय विद्यार्थियों के आत्म–विश्वास में अन्तर है अर्थात् नगरीय विद्यार्थियों में आत्म–विश्वास ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।

आत्मविश्वास और आत्म–प्रकटीकरण मनुष्य का एक ऐसा अंग होता है जिससे वे जीवन की सभी लड़ाईयों को लड़ सकता है। ऐसे में अभिभावकों को बच्चों के साथ ऐसा व्यवहार करना चाहिए जिससे उनके आत्मविश्वास के साथ आत्म–प्रकटीकरण में वृद्धि हो सके। अतः ग्रामीण क्षेत्रों में अभिभावकों द्वारा अपने बच्चों के आत्मविश्वास को ऊँचा करने का प्रयास करना चाहिए। विद्यार्थियों की आवश्यकता एवं उनके कैरियर पर विशेष ध्यान देते हुए उनसे खुलकर बात करना तथा अपने सामाजिक–आर्थिक स्थिति को खुले रूप में बताते हुए ग्रामीण अभिभावकों को अपने बच्चों का मनोबल ऊँचा करने की जरूरत है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गोयल, पी. (2015). किशोरों में सामाजिक परिपक्वता, अंतरराष्ट्रीय बहु–विषयक ई–जर्नल, IV, 89–95।
2. गुप्ता, एस.पी. (2010). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
3. गुप्ता, एस.पी. (2010). आधुनिक मापन तथा मूल्याकंन, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
4. अंकुर सिंह (2000). किशोर छात्र–छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति एवं समायोजन में उनके आत्मविश्वास की भूमिका, पी–एच.डी. सी0एस0जे0एम0 विश्वविद्यालय. कानपुर।